[This Question Paper contains 2 printed pages]
यह प्रश्न पत्र 2 मुद्रित पृष्ठों का है।

Your Roll Number.....
आपका अनुक्रमांक.....

**Sr. No. of Question Paper : 15222**

**L**

| | | |
|---|---|---|
| Name of the Course | : | ITEP |
| Unique Paper Code | : | 2052103603 |
| Name of the Paper | : | Kathetar Gadya Sahitya |
| Semester | : | VI, 2025-2026 |

Duration: 3 Hours
समयावधि: 3 घंटे

Maximum Marks: 90
पूर्णांक: 90

Important Instructions/ महत्वपूर्ण निर्देश:

इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कथेतर गद्य साहित्य का परिचय देते हुए उसके स्वरूप पर विचार कीजिए. 15

अथवा

कथेतर गद्य साहित्य की विकास यात्रा समझाते हुए कथा साहित्य के साथ उसके अंत:संबंध को स्पष्ट कीजिए.

2. कथेतर गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं का परिचय दीजिए. 15

अथवा

रिपोतार्ज और पत्र साहित्य के अंतर को स्पष्ट करते हुए रिपोतार्ज विधा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए.

3. महादेवी वर्मा रचित 'दद्दा' संस्मरण के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की साहित्यिक विशेषताओं को लिखिए. 15

अथवा

अज्ञेय रचित 'भारत कोकिला' रेखाचित्र के आधार पर सरोजिनी नायडू की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए.

4. डायरी विधा के आधार पर रमेशचंद्र शाह की डायरी रचना 'अकेला मेला' की समीक्षा कीजिए. 15

अथवा

फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोतार्ज 'बिदापत नाच' की मुख्य सांस्कृतिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए.

5. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग समीक्षा कीजिए : 2x8=16

(क) "साइमन कमीशन का बहिष्कार करने का निश्चय हुआ था, लेकिन कुछ लोग कमीशन के सामने बयान देने गये थे। लाहौर में पंजाब विश्वविद्यालय के सेनेट हाल में कमीशन की बैठक हो रही थी। विश्वविद्यालय के कुछ व्यक्तियों को गैलरी में बैठने की अनुमति मिली थी; इन में लीलामणि भी थीं। गवाहों के बयान पर वह लगातार व्यंग्य-भरी टिप्पणियाँ करती जाती थीं जिस में हम सब रस ले रहे थे। साइमन साहब का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। वह बार-बार नजर उठा कर गैलरी की ओर घूरते और फिर इस लिए सब्र कर लेते कि बाधा देने वाली एक स्त्री है। इस से लोगों को और मजा आता; इधर लीलामणि की छींटाकशी भी और तीखी होती जाती ।

अन्त में जब साइमन साहब से नहीं रहा गया तब उन्होंने गैलरी में लीलामणि की ओर देखते हुए पूछा, "क्या यही शिक्षित भारतीय नारी का नमूना है?"

नीचे कुछ लोग होंठ दबा कर मुस्करा दिये। लेकिन गैलरी से कड़कती हुई आवाज आयी : "जी नहीं, मैं ऑक्सफ़ोर्ड की फ़र्स्ट क्लास ग्रेजुएट हूँ !"

अथवा

इसी प्रक्रिया का भाषागत पर्याय भी अवश्य है, और उस के प्रति जागरूक रहना भाषा के प्रयोक्ता का कर्तव्य है। केवल पंडित या अध्यापक या वैयाकरण की जागरूकता प्रक्रिया को पहचानने और अंकित करने तक भी सीमित रह सकती है, पर कृतिकार उस से आगे जाता है क्योंकि वह केवल पहचानने वाला नहीं है, उस का कार्य इस प्रक्रिया को निरन्तर ऐसी प्रणालियों में डालते चलना भी है जिन से भाषा प्राण-रस की वाहिका बनी रह सके ।

(ख) "तुम्हारे कवित्त-कहानी-लेख जो भी जहाँ भी दिख जाते हैं, पढ़ तो जाता हूँ। मगर तुम्हारी कुछ बातें समझ में नहीं आतीं। ऊपर-ऊपर से निकल जाती हैं। कभी कुछ हमारे जैसों के लिए भी लिखा करो। ...मैं उपदेश नहीं दे रहा हूँ-मेरी बातों का बुरा मत मानना। मन की बात कहनी ही पड़ेगी। अरे, आज के ज़माने में तो कालिदास को भी तुलसीदास बनना पड़ेगा। तुम समझे कि नहीं समझे ? कालिदास को पढ़ने वाले कितने होंगे ? अरे, निन्यानवे फीसदी लोग पढ़े-लिखों में भी मेरे जैसे ही होंगे। उनसे कौन बात करेगा ? उनकी खबर कौन लेगा ? ज़रा अपने पहाड़ से उतर के नीचे तो देखो, अपने आसपास भी तो देखो। उतरो उनके बीच अपने आँख-कान खोल के और उनकी तरह बोल के देखो, क्या होता है! बात तुम बेशक अपनी ही करो, जितनी ऊँची चाहो, उतनी ऊँची करो। मगर ऐसी जुबान में तो करो जो उनकी सबकी जुबान हो, उनकी सबकी समझ में आए।

अथवा

दुखी-दीन, अभावग्रस्तों ने घड़ी-भर हँस-गाकर जी बहला लिया, अपनी जिंदगी पर भी दो-चार व्यंग्य-बाण चला दिए, जी हल्का हो गया। अर्धमृत वासनाएँ थोड़ी देर के लिए जगीं, अतृप्त जिंदगी के कुछ क्षण सुख से बीते। मेहनत की कमाई मुट्ठी-भर अन्न के साथ-साथ आज इन्हें थोड़ा-सा 'मोहक प्यार' भी मिलेगा, इसमें संदेह नहीं। आप खोज रहे हैं-आर्ट, टेकनीक और न जाने क्या-क्या, और मैं आपसे चलते-चलाते फिर भी अर्ज करता हूँ कि यह महज बिदापत-नाच था।

6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 2x7=14

(1) रेखाचित्र विधा : उद्भव और विकास
(2) अज्ञेय की दृष्टि में 'एक भारतीय आत्मा : एक चुनौती'
(3) आवारा मसीहा के आधार पर शरतचंद्र की विशेषताएँ
(4) निराला के पत्र साहित्य की विशेषता